अध्याय
01

ईंटे, मनके और अस्थियाँ

(हड़प्पा सभ्यता)

हड़प्पा सभ्यता की खोज

- सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता प्रथम **नगरीय** सभ्यता थी।
- इससे इस सभ्यता में सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थल की खोज की गई, जिसका श्रेय **1875** ई० में भारतीय पुरातत्व विभाग के सर्वेक्षक **अलेक्जेंडर कनिंघम** को दिया जाता है, इन्हें ही भारतीय पुरातात्विक विभाग का जनक कहा जाता है।
- सन **1921ई० दयाराम साहनी** ने हड़प्पा नामक स्थल की खोज की है।
- सन **1922ई०** में राखालदास बनर्जी ने **मोहनजोदड़ो** नामक स्थल की खोज की।
- इस प्रकार विश्व के समक्ष एक नई सभ्यता की जानकारी मिली जो **मेसोपोटामिया** की सभ्यता के समकालीन थी।
- कार्बन डेटिंग के अनुसार इस सभ्यता का काल निर्धारण **2350** से **1750** ई० पू० तक निर्धारित किया गया।

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव भारतीय उपमहाद्वीप के **पश्चिम** उत्तर भाग में हुआ था।

उद्भव एवं विस्तार

इस सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता पड़ा क्योंकि इस सभ्यता में सर्वप्रथम **1921** ई०, में **हड़प्पा** नामक स्थल की खोज की गई।

हड़प्पा सभ्यता का भौगोलिक विस्तार उत्तर में जम्मू के **मांडा** से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र के **दायमाबाद** तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के **मकरान** समुद्री तट से लेकर उत्तर पूर्व में **आलमगीरपुर** तक था।

इस सभ्यता का संपूर्ण क्षेत्र **त्रिभुजाकार** है और क्षेत्रफल 12 लाख 99 हजार 600 वर्ग किलोमीटर है।

इस सभ्यता में 2 सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगर थे पंजाब में हड़प्पा और सिंध में मोहनजोदड़ो अर्थात **मृतकों का टीला।** दोनों वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। यह दोनों नगर एक दूसरे से **483** किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पिग्गट महोदय ने इन दोनों नगरों को **जुड़वा** राजधानी कहा है।

इस सभ्यता का तीसरा नगर **चन्हूदड़ो** सिंध मे स्थित है। यह मोहनजोदड़ो से 130 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

इस सभ्यता का चौथा नगर **लोथल** गुजरात में स्थित है।

इस सभ्यता का पांचवाँ नगर **कालीबंगा** (काले रंग की चूड़ियाँ) उत्तरी राजस्थान में स्थित था एवं छठा नगर बनावली हरियाणा में स्थित था।

इस सभ्यता का सातवाँ नगर **धोलावीरा** गुजरात के कच्छ में स्थित था।

हड़प्पा संस्कृति का विकास उसी समय हुआ जब एशिया, अफ्रीका के अन्य भागों में **नील, दजला, फरात** और **हन्वांगहो** नदी की घाटियों में दूसरी सभ्यताओं का विकास हुआ।

हड़प्पा संस्कृति का उदय आज से लगभग **4700** वर्ष पूर्व हुआ था।

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

हड़प्पा— हड़प्पा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के **मोंटगोमरी** जिले में स्थित था। यह **रावी** नदी किनारे स्थित है। इसकी खोज दयाराम साहनी ने की थी। हड़प्पा से 6 कोठार मिले हैं जो ईंटों के बने चबूतरे पर स्थित हैं। प्रत्येक कोठार 15.23 मीटर लंबा और 6.09 मीटर चौड़ा है।

मोहनजोदड़ो—यह पाकिस्तान के लरकाना जिला में सिंधु नदी के किनारे स्थित है, इसकी खोज राखालदास बनर्जी ने 1922 ई० में की थी। मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल **विशाल स्नानागार** है। यह 11.8 मीटर लंबा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा है।

- स्नानागार में उतरने के लिए इसके उत्तर एवं दक्षिण दिशा में सीढ़ियाँ बनी हुई हैं इसका फर्श पक्की ईंटों का बना हुआ है। इस स्नानागार का विशेष धार्मिक महत्व था।
- मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अनाज रखने का कोठार है जो 45.78 मीटर लंबा और 15.23 मीटर चौड़ा है।
- मोहनजोदड़ो के कई आवासों में कुएँ भी मिले हैं जिनकी संख्या लगभग 700 है।

लोथल—लोथल गुजरात के खंभात की खाड़ी में स्थित है यह भोगवा नदी के किनारे स्थित है। इसकी खोज रंगनाथ राव ने 1957 ई० में की थी।

- लोथल में **बंदरगाह** पाया गया है यहाँ समुद्र के रास्ते आने वाली नाव रुकती थी, संभवत: यहाँ माल उतारा और चढ़ाया जाता था।
- लोथल में एक इमारत मिली है यहाँ संभवत: **मनके** बनाने का कार्य होता था।
- लोथल के लोग **1800ई०** पू० मे धान उगाते थे, जिसके अवशेष पाए गए हैं।

कालीबंगा—कालीबंगा राजस्थान के **घग्गर** नदी के किनारे स्थित है इसकी खोज अमलानंद घोष ने की थी। कालीबंगा का अर्थ है **काले रंग की चूड़ियाँ।**

- यहां से **हल** का प्रमाण मिला है, एवं **जुते हुए खेत** का प्रमाण मिला है।

चन्हूदड़ो— चन्हूदड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधु नदी के किनारे स्थित है। इसकी खोज 1931 ई० में एन. जी. मजूमदार ने की थी। यहाँ से केवल एक टीले की सरंचना मिली है, इसके अलावा बाकी स्थलों से प्राप्त सुरक्षा दीवार जैसी कोई सरंचना नहीं मिली है, अत: इसे हड़प्पा सभ्यता का बिना दुर्ग का एकमात्र नगर भी कहा जाता है।

धोलावीरा—गुजरात के कच्छ क्षेत्र में **धोलावीरा** स्थित है।

- यह नगर तीन भागों में बाँटा गया था। धोलावीरा अपनी **जल** प्रणाली एवं सिंचाई प्रणाली के लिए प्रसिद्ध था।

हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना

दुर्ग—1.1 हड़प्पा संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी नगर योजना थी।

- नगर दो भागों में विभक्त थे- एक छोटा लेकिन ऊँचाई पर बनाया गया भाग जिसे **दुर्ग** कहा जाता था दूसरा कहीं अधिक बड़ा लेकिन नीचे बनाया गया भाग जिसे निचला शहर का नाम दिया गया था जिसमें आम जनता निवास करती थी।
- दुर्ग को दीवार से घेरा गया था जिसका अर्थ है इसे निचले शहर से अलग किया गया था। निचले शहर को भी दीवार से घेरा गया था इसके अलावा कई भवनों को ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था।

सड़कें तथा भवन—हड़प्पा सभ्यता के नगरों से प्राप्त सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती हुई **ग्रिड** पद्धति में शहर को आयताकार भागों में विभाजित करती थी। सड़कों के किनारे पर घर पाए जाते थे। मकान एक मंजिलें एवं दो मंजिलें दोनों प्रकार की पाई जाती थीं।

- मकानों के बीच में आँगन पाया जाता था जिसके चारों ओर कमरे पाए जाते थे। संभवत: आँगन खाना पकाने और कताई जैसी गतिविधियों का केंद्र था।
- यहाँ के लोग एकांतता को महत्व देते थे अत: भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं होती थी। इसके अतिरिक्त मुख्य द्वारों से आंतरिक भाग अथवा आँगन का सीधा अवलोकन नहीं होता था।
- हर घर का ईंटों के फर्श से बना अपना एक स्नानघर होता था। कुछ घरों मे दूसरे तल या छत पर जाने के लिए सीढ़ियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- कई आवासों में कुएं मिले हैं जो अधिकांशत: ऐसे कक्ष में बनाए गए हैं जिसमें बाहर से आया जा सकता था और जिसका प्रयोग राहगीरों द्वारा भी किया जाता था। मोहनजोदड़ो में कुँओं की संख्या लगभग **700** थी।

नालियों का निर्माण—

- हड़प्पा सभ्यता की सबसे अनूठी विशेषताओं में से एक इसकी जल निकास प्रणाली थी।
- सड़के तथा गलियों को लगभग एक **ग्रिड** पद्धति में बनाया गया था और वह एक-दूसरे को **समकोण** पर काटती थी।
- ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया और फिर उनके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया गया।
- घरों का पानी बहकर सड़कों तक आता था जहाँ इनके नीचे नालियां बनी हुई थी।
- ये नालियां ईंट और पत्थरों से ढंकी रहती थी सड़कों की इन नालियों में मेन होल बने होते थे।
- हड़प्पा सभ्यता की जल निकास प्रणाली विलक्षण थी संभवत: किसी अन्य संस्कृति ने स्वास्थ्य और सफाई को इतना महत्त्व नहीं दिया था जितना कि हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने दिया था।

सामाजिक जीवन

- हड़प्पा समाज **मातृसत्तात्मक** समाज था।
- पुरुषों और महिलाओं दोनों के शवाधानों से आभूषण प्राप्त हुए हैं।
- कहीं-कहीं पर मित्रों को तांबे के बर्तनों के साथ दफनाया गया था।
- हड़प्पाई लोग जौ और गेहूं को चक्कियों में पीसकर उनके आटे की रोटी बनाते थे। उन्हें फल भी पसंद थे, विशेषकर अनार और केले और ये मांस - मछली भी खाते थे।
- हड़प्पाई लोग कपड़ा बुनना जानते थे, बहुत सी स्त्रियाँ घर पर सुत कातने का कार्य करती थीं।
- हड़प्पा सभ्यता में कपड़े सूती होते थे यद्यपि ऊन का भी प्रयोग होता था।
- स्त्री और पुरुष दोनों को आभूषण पहनने का शौक था। पुरुष ताबीज पहनते थे और स्त्रियाँ कंगन और हार पहनती थी।
- हड़प्पा वासी विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधनों का प्रयोग करते थे, यहाँ से बच्चों के खेलने के लिए कंचे और मिट्टी की बैलगाड़ी तथा चिड़ियों के आकार की सीटियाँ और विभिन्न प्रकार के झुनझुने मिले हैं।

धार्मिक जीवन

- हड़प्पा सभ्यता के निवासी **मातृदेवी** के साथ **देवताओं** की उपासना करते थे।
- धार्मिक अनुष्ठानों के लिए धार्मिक इमारतें बनाई गई लेकिन मंदिर के प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं।
- मातृदेवी और देवताओं को बलि भी दी जाती थी।
- मोहनजोदड़ो से एक मोहर प्राप्त हुई है जिस पर पद्मासन की मुद्रा में तीन मुख वाला पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठा हुआ है जिसकी बाई तरफ एक गैंडा और एक भैंसा एवं दायें तरफ एक हाथी तथा एक बाघ है। आसन के नीचे दो हिरण भी बैठे हुए हैं। इसे **पशुपति महादेव** का रूप माना गया है।
- पशुपति महादेव, वृक्ष, लिंग, योनि और पशु आदि की उपासना की जाती थी। वृक्ष पूजा भी काफी लोकप्रिय था।
- इस काल के लोग जादू-टोना, भूत- प्रेत और अन्य अंधविश्वासों पर भी विश्वास किया करते थे और इससे बचने के लिए **ताबीज** का इस्तेमाल किया करते थे।
- हड़प्पा से काफी संख्या में **टेराकोटा** की नारी मूर्तियाँ मिली है इसमें से एक मूर्ति में नारी के गर्भ से एक पौधा निकलता हुआ दिखलाया गया है, जिससे यह ज्ञात होता है कि धरती को उर्वरता की देवी माना जाता था और संभवत: पूजा भी जाता था।
- इस काल में **पशु पूजा** का भी प्रचलन था, मुख्य रूप से एक सिंग वाले जानवर की पूजा होती थी जो संभवत: गैंडा हो सकता है। खुदाई में मुहरों पर **कूबड़ वाले** वृषभ का अंकन मिला है संभवतः कूबड़ वाले वृषभ की भी पूजा की जाती होगी। पवित्र पक्षी के रूप में फाखता की भी पूजा की जाती थी।
- गुजरात के लोथल तथा राजस्थान के कालीबंगा की खुदाई से **अग्निकुंड** मिले हैं, स्वास्तिक चिन्ह संभवत: हड़प्पा सभ्यता की देन है।

आर्थिक स्थिति

कृषि तथा व्यापार हड़प्पा सभ्यता के स्थलों की आर्थिक गतिविधियों का केंद्र था।

हड़प्पा सभ्यता में गेहूं जौ, राई मटर आदि अनाज का उत्पादन अधिक होता था।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के साथ कालीबंगा में भी अनाज अन्नागार में संरक्षित किया जाता था।

सबसे पहले कपास को उगाने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को दिया जाता है, यही कारण है कि यूनान में लोगों ने इसे **सिंडन** कह कर संबोधित किया।

सिंधु घाटी के लोग बैल, गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और सुअर पालते थे। उन्हें कूबड़ वाला सांड विशेष रूप से प्रिय था। ये लोग गधे और ऊँट भी रखते थे और संभवत: उस पर बोझा ढोते थे।

वाणिज्य तथा व्यापार

हड़प्पाई लोग सिंधु सभ्यता के क्षेत्र के अंतर्गत पत्थर, धातु तथा हड्डी का व्यापार करते थे। ये लोग धातु के सिक्के का प्रयोग व्यापार के लिए करते थे। वे व्यापार के लिए वस्तु-विनिमय प्रणाली का प्रयोग करते थे।

हड़प्पा वासी अपनी वस्तु और अनाजों को **नाव** तथा **बैलगाड़ी** के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे।

हड़प्पावासी अरब सागर के तट पर स्थित बंदरगाह सुत्कागेंडोर तथा लोथल से बाह्य व्यापार करते थे। हड़प्पा सभ्यता में लोग **पहिए** से परिचित थे तथा ठोस पहिए वाली बैलगाड़ी का प्रयोग करते थे।

हड़प्पावासियों का व्यापारिक संबंध राजस्थान, अफगानिस्तान और ईरान से भी था, इसके अतिरिक्त बहुत-सी हड़प्पा की मोहरें **मेसोपोटामिया** की खुदाई से भी प्राप्त हुई हैं।

हड़प्पावासी तांबा **खेतड़ी** तथा **बलूचिस्तान** से, **टीन अफगानिस्तान** तथा **ईरान** से, सेलखड़ी **दक्षिणी राजस्थान** एवं **उत्तरी गुजरात**, लाजवर्द मणि **शोर्तुघई** से, सोना **दक्षिण भारत** से प्राप्त करते थे।

हड़प्पा वासियों का पश्चिमी एशिया के साथ व्यापार

- पश्चिम एशिया विशेषकर मेसोपोटामिया के साथ हड़प्पावासियों की व्यापारिक संबंधों की अनेक प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यह व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था।
- तांबे को संभवत: **ओमान** से लाया जाता था। रसायनिक अवशेषों से यह प्रतीत होता है कि हड़प्पा तथा ओमान के बर्तनों में **निकेल** के जो अंश पाए गए हैं उनका उद्भव एक ही है।
- ओमान में एक हड़प्पाई जार प्राप्त हुआ है, जिस पर काली मिट्टी की परत चढ़ी हुई है, यह हड़प्पावासियों के पश्चिम एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों को दर्शाता है।
- हड़प्पावासियों के शिल्प कार्य के लिए बलूचिस्तान और ईरान से चाँदी आती थी, तांबा मुख्य तौर पर ईरान तथा अफगानिस्तान से आता था।
- मेसोपोटामिया से प्राप्त कई प्रलेखों में **मगन** तथा **मेलुहा** जो हड़प्पाई क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त होता था, यहाँ से लाये गए उत्पादों की चर्चा है।
- हड़प्पा के मुहरों में पानी जहाजों एवं नावों के चित्र मिलते हैं, यह उनके समुद्री व्यापार की ओर संकेत करता है। मेसोपोटामिया के प्रलेखों मे भी **मेलुहा** को नाविकों का देश कहा गया है।

मनके, मुहरे तथा बाट

- मुहरों का प्रयोग सामान से भरे उन डिब्बों या थैली को चिन्हित करने के लिए किया जाता था, जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाता था।
- चन्हूदड़ो शिल्प कार्य के लिए प्रसिद्ध था। शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातु कर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना आदि सम्मिलित थे।
- कुछ मनके 2 या उससे अधिक पत्थरों को आपस में जोड़कर बनाए जाते थे।
- हड़प्पा सभ्यता की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ मुहरे हैं, अब तक लगभग दो हजार मुहरें प्राप्त हुई हैं।
- इनमें से अधिकांश मुहरों पर लघु लेखों के साथ-साथ एक सिंग वाला जानवर,भैंस, बाघ, बकरी और हाथी की आकृतियाँ उत्कीर्ण है।
- हड़प्पा सभ्यता में बाटों की एक परिशुद्ध प्रणाली प्रचलित थी। यह बाट समान्यत: चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे और यह किसी प्रकार के निशान से रहित एवं घनाकार होते थे। इन बाटों के निचले मान दंड दिवा धारी (1, 2,4,8,16,32,से, 12800 तक) थे। जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।
- बाट के रूप में प्रयोग की गई कई वस्तुओं के अवशेष हड़प्पा स्थल से प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि तौल मे 16 या उनके आवर्तकों का प्रयोग होता था।
- हड़प्पा के लोग मापना भी जानते थे। लोथल से हाथी दांत से निर्मित एक पैमाना मिला है जो हड़प्पा स्थलों में मापन प्रणाली के ज्ञान की पुष्टि कर सकें।

हड़प्पाई लिपि

- हड़प्पाई लिपि को अब तक पढ़ने में सफलता प्राप्त नहीं हुई है पर निश्चित रूप से यह वर्णमालीय नहीं थी। (जहाँ प्रतीक चिन्ह एक स्वर तथा व्यंजन को दर्शाता है), इसमें चिन्हों की संख्या कहीं अधिक है—375 से 400 के बीच।
- ऐसा प्रतीत होता है कि यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी क्योंकि कुछ मुहरों पर चौड़ा अंतराल एवं बाईं ओर यह संकुचित है जिससे लगता है कि उत्कीर्णांक ने दाईं ओर से लिखना शुरू किया और बाद में स्थान कम पड़ गया।
- हड़प्पा लिपि के अधिकांश लेख मुद्राओं पर पाए गए हैं। इन लेखों में अधिकांश लेख बहुत ही छोटे हैं।

हड़प्पा सभ्यता की खोज

- हड़प्पा सभ्यता की शासन व्यवस्था के संबंध में कोई ठोस प्रमाण के अभाव में विशेष जानकारी नहीं मिलती है।
- पुरातत्वविदों ने मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक विशाल भवन को राजप्रासाद की संज्ञा दी है, परंतु इससे संबंधित कोई भी वस्तु हमें प्राप्त नहीं हुई है।
- हड़प्पा सभ्यता के शासन व्यवस्था के बारे में अनुमान लगाया जाता है कि उनका एक राजा रहता था, जो संभवत: पुरोहित होता था क्योंकि इस सभ्यता के समकालीन मेसोपोटामिया एवं सुमेर में पुरोहित वर्ग शासन करते थे लेकिन इस संबंध में कोई स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ है।
- कुछ पुरातत्वविद का मानना है कि हड़प्पा समाज में कोई शासक नहीं था क्योंकि सभी की सामाजिक स्थिति एक समान थी।
- कुछ पुरातत्वविदों का मानना है कि सिंधु घाटी सभ्यता में कोई एक नहीं बल्कि कई शासक थे, जैसे- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के अपने अलग-अलग राजा होते थे।
- कुछ अन्य पुरातत्वविदों का मानना है कि यहाँ कोई एक ही राजा होता था क्योंकि यहाँ से प्राप्त प्राकृतिक वस्तुओं में समानता, नियोजित बस्तियों के प्रमाण, ईंटों का एक निश्चित अनुपात आदि के आधार पर इसे प्रमाणित किया जा सकता है।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण

- हड़प्पा सभ्यता के पतन को लेकर विद्वान एकमत नहीं है। इस सभ्यता के पतन के संबंध में कुछ विद्वानों का मानना है कि नदियों में आने वाली बाढ़ के कारण ही इस सभ्यता का अंत हुआ होगा क्योंकि इस सभ्यता के अधिकांश नगर नदियों के किनारे स्थित थे।
- कुछ विद्वानों का मानना है कि इस सभ्यता के पतन का कारण यहाँ होने वाले बाह्य् आक्रमण हैं। विद्वानों का मानना है कि संभवत: आर्यों ने यहाँ में आक्रमण कर इस सभ्यता का अंत कर दिया।
- कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन हड़प्पा संस्कृति के विनाश का कारण बना।
- कुछ विद्वानों ने जल प्लावन को इस सभ्यता के पतन का कारण माना है।
- कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि नदियों के मार्ग में परिवर्तन इस सभ्यता के पतन का कारण बना। इसके अलावा समय-समय पर आने वाले भूकंपो ने भी नगरों का विनाश किया।
- कुछ अन्य विद्वान प्राकृतिक आपदाओं को भी सिंधु घाटी सभ्यता के पतन का एक प्रमुख कारण मानते हैं। इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के पतन का कोई एक कारण नहीं बल्कि इसके पतन के कई कारण थे।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को उपलब्ध भोजन की सूची बनाइए इन वस्तुओं को उपलब्ध कराने वाले समूह की पहचान कीजिए।

उत्तर—

भोजन

(1) पेड़ पौधों से प्राप्त उत्पाद—संग्राहक

(2) मांस तथा मछली—आखेटक समुदाय

(3) गेहूं, जौ, दाल, सफेद चना, बाजरा, चावल, तिल जैसे खाद्य पदार्थ—कृषक समूह

प्रश्न 2. पुरातत्वविद हड़प्पाई समाज में सामाजिक, आर्थिक भिन्नता का पता किस प्रकार लगाते हैं? यह कौन-सी भिन्नताओं ध्यान देते हैं?

उत्तर — पुरातत्वविद हड़प्पा समाज में सामाजिक, आर्थिक भिन्नता का पता कई प्रकार से लगाते हैं। इसके लिए निम्नलिखित भिन्नता को आधार बनाते हैं—

शवाधान— मृतकों को दफनाते समय उनके साथ विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ रखी जाती थी। वे वस्तुएँ बहुमूल्य भी हो सकती थी और साधारण भी। हड़प्पा स्थलों के जिन गड्ढों में शवो को दफनाया गया था वहाँ भी यह भिन्नता दिखाई देती है। बहुमूल्य वस्तुएँ मृतक की मजबूत आर्थिक स्थिति को व्यक्त करती हैं जबकि साधारण वस्तुएँ उसकी साधारण आर्थिक स्थिति की प्रतीक हैं।

विलासिता की वस्तुएँ— सामाजिक भिन्नता को पहचानने की एक विधि है पूरावस्तुओं का अध्ययन। पुरातत्वविद इनको मोटे तौर पर उपयोगी तथा विलास की वस्तु में वर्गीकृत करते हैं। पहले वर्ग में उपयोग की वस्तुएँ शामिल हैं। इसे पत्थर अथवा मिट्टी आदि

साधारण पदार्थों से आसानी से बनाया जा सकता है। इनमें चकिया, मृदभांड आदि शामिल है। यह वस्तुएँ प्राय सभी बस्तियों में पाई गई हैं। पुरातत्वविद उन वस्तुओं को कीमती मानते हैं जो दुर्लभ हो अथवा महंगी हो या फिर स्थानीय स्तर पर ना मिलने वाले पदार्थों से अथवा जटिल तकनीकों से बनी हुई हो। में ऐसी कीमती वस्तुएँ मिली हैं वहां के समाजों का स्तर अपेक्षाकृत उच्च रहा होगा।

प्रश्न 3. क्या आप इस तथ्य से सहमत हैं कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली नगर योजना की ओर संकेत करती हैं? अपने उत्तर के कारण बताइए।

उत्तर—1. ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया और फिर उनके साथ घर बनाए गए थे। प्रत्येक घर के गंदे पानी की निकासी एक पाइप से होती थी जो सड़क और गली की नाली से जुड़ी होती थी।

2. नक्शा से जान पड़ता है कि शहरों में सड़कों और गलियों को लगभग एक ग्रिड प्रणाली से बनाया गया था और वह एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।

3. जल निकास प्रणाली बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं थी बल्कि यह कई छोटी बस्तियों में भी दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए लोथल में आवासों के बनाने के लिए जहाँ कच्ची ईंटों का प्रयोग किया गया है, लेकिन नालियों को पक्की ईंटों से बनाया गया है।

प्रश्न 4 हड़प्पा सभ्यता में मनके बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थों की सूची बनाइए। कोई भी एक प्रकार का मनका बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर - मनके बनाना हड़प्पा सभ्यता के लोगों की एक अति महत्वपूर्ण शिल्प क्रिया थी। यह मुख्यत: चन्हूदड़ो में प्रचलित थी।

प्रयुक्त सामग्री- मनके बनाने के लिए भिन्न-भिन्न पदार्थ प्रयोग में लाए जाते थे। उदाहरण के लिए कार्नेलियन के मनके बनाने की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण शामिल थे—

1. कार्नेलियन का लाल रंग प्राप्त करने के लिए पीले रंग के कच्चे माल को उत्पादन के विभिन्न चरणों में आग में पकाया जाता था।

2. पत्थर के पिंडों को पहले अपरिष्कृत आकारों में ही तोड़ लिया जाता था और फिर शल्क निकालकर इन्हें अंतिम रूप दिया जाता था।

3. आखिरी चरण में मनकों की घिसाई की जाती थी और इनमें छेद किए जाते थे। इन पर पॉलिश होने के बाद मनके तैयार हो जाते थे।

प्रश्न 5- मोहनजोदड़ो की कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- मोहनजोदड़ो हड़प्पा सभ्यता का एक अनूठा तथा अति महत्वपूर्ण शहर था। यद्यपि इसकी खोज हुई थी यह तथापि अपनी विशेषताओं के कारण बहुत ही विख्यात है। इसकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन निम्नलिखित है-

एक नियोजित शहरी केंद्र- मोहनजोदड़ो एक नियोजित शहरी केंद्र था। इसे दो नियोजित भागों में बाँटा गया था। इनमें से एक भाग छोटा था जिसे ऊँचाई पर बनाया गया था। दूसरा भाग बड़ा था और उसे नीचे बनाया गया था। पुरातत्वविद ने इन्हें क्रमश: दुर्ग और निचले शहर का नाम दिया है। दुर्ग की ऊँचाई का कारण यह था कि यहाँ भी संरचनाएँ कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनाई गई थी। दुर्ग को दीवार से घेरा गया था जो इसे निचले शहर से अलग करती थी।

गृह स्थापत्य — मोहनजोदड़ो का निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत

करता है। घरों की बनावट में समानता पाई गई है।ज्यादातर घरों में आँगन होता था और उसके चारों तरफ कमरे बने होते थे। हर घर का ईंटों से बना अपना एक स्नानागार होता था जिसकी नालियां दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थी।

दुर्ग— दुर्ग में कई प्रकार के भवन ऐसे थे जिनका उपयोग विशेष सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए किया गया था। निम्नलिखित दो संरचनाएँ सबसे महत्वपूर्ण थी। पहला-माल गोदाम और दूसरा-विशाल स्नानागार। इसकी विशिष्ट संरचनाओं के साथ इनके मिलने से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि इसका प्रयोग किसी विशेष प्रकार के अनुष्ठान के लिए किया जाता था।

नालियों की व्यवस्था— मोहनजोदड़ो नगर में नालियों का निर्माण भी बहुत नियोजित तरीके से किया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों का निर्माण किया गया था और फिर उनके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया गया था। प्रत्येक घर के गंदे पानी की निकासी एक पाइप से होती थी जो सड़क गली की नाली से जुड़ा होता था। यदि घरों के गंदे पानी को नालियों से जोड़ना था तो प्रत्येक घर की कम-से-कम एक दीवार का गली से सटा होना आवश्यक था।

सड़कें और गलियाँ— जैसा प्रतीत होता है कि सड़कें और गलियाँ सीधी होती थी और एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। मोहनजोदड़ो में निचले नगर में मुख्य सड़क 10.5 मीटर चौड़ी थी। इसे प्रथम सड़क कहा गया है। बाकी सड़कें 3.6 मीटर से 4 मीटर तक चौड़ी होती थी घरों की दीवार से पहले ही सड़कों तथा गलियों के लिए स्थान छोड़ दिया जाता था।

प्रश्न 6. हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाइए तथा चर्चा कीजिए कि यह किस प्रकार प्राप्त किए जाते होंगे?

उत्तर— हड़प्पा सभ्यता में कई प्रकार का शिल्प उत्पादन होता था। इसके लिए विभिन्न प्रकार के कच्चे मालों की जरूरत पड़ती थी इनमें युक्त कच्चे मालों की सूची नीचे दी गई है—

1. कार्नेलियन 2. जैस्पर 3.स्फ़टिक 4.क्वाटअर्ज 5. शंख

6. सेलखड़ी 7. तांबा 8. कांसा 9. सोना 10. मिट्टी 11. लाजवर्द मणि 12. अस्थियाँ 13. जिप्सम14.फेयन्स 15. विविध प्रकार की लकड़ियाँ तथा पत्थर।

कच्चा माल प्राप्ति के तरीके— मिट्टी, साधारण लकड़ी जैसे कुछ माल स्थानीय रूप से उपलब्ध थे परंतु पत्थर, बढ़िया लकड़ी तथा धातु बाहर के क्षेत्रों से मंगवाने पड़ते थे। इसके लिए हड़प्पावासी कई तरीके अपनाते थे जो निम्नलिखित थे—

1. बस्तियाँ स्थापित करना— हड़प्पावासी उन स्थानों पर बस्तियाँ स्थापित करते थे जहाँ कच्चा माल आसानी से उपलब्ध था। उदाहरण के लिए नागेश्वर तथा बालाकोट में शंख आसानी से उपलब्ध था। ऐसे ही कुछ अन्य पुरास्थल थे। जैसे-सुदूर अफगानिस्तान में शोर्तुघई। यही स्थान अत्यंत गिनती माने जाने वाले नीले रंग के पत्थर लाजवर्द मणि के स्रोत के निकट स्थित था।

2.अभियान भेजना— अभियान भेजना कच्चा माल प्राप्त करने की एक नीति थी। उदाहरण के लिए राजस्थान के खेतड़ी में तांबे तथा दक्षिण भारत में सोने के लिए अभियान भेजे गए थे। इन अभियानों के माध्यम से स्थानीय समुदायों के साथ संपर्क स्थापित किया जाता था।

प्रश्न 7. चर्चा कीजिए कि पुरातत्वविद किस

प्रकार अतीत का पुनर्निर्माण करते हैं?

उत्तर— पुरातत्वविद प्राचीन स्थलों का उत्खनन करके विभिन्न वस्तुएँ प्राप्त करते हैं और विभिन्न वैज्ञानिकों की मदद से उनका अन्वेषण व्याख्या और विश्लेषण करके कुछ निष्कर्ष निकालते हैं।

पुरातत्वविद निम्नलिखित तरीके से अतीत का पुनर्निर्माण करते हैं—

1. पुरातत्व की वस्तुओं की पहचान एक विशेष प्रक्रिया के जरिए की जाती है। यहाँ एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल मोहनजोदड़ो में हुए उत्खनन में अवतल चकिया बड़ी संख्या में मिली है और ऐसा प्रतीत होता है कि अनाज पीसने का यह एकमात्र साधन था। यह चकिया कठोर और बलुआ पत्थर से निर्मित थी जिन्हें मिट्टी में जमाकर रखा जाता था ताकि इन्हें हिलने से रोका जा सके।

2. दो मुख्य प्रकार की चकिया मिली है जिसमें पहली चक्की में दो पत्थर को आपस में रगड़ा जाता था जिससे निचला पत्थर खोखला हो जाता था और मसाला और जड़ी-बूटी को पीसने में प्रयोग किया जाता था और दूसरी चक्की केवल तरी बनाने में उपयोग किया जाता था।

3. पुरातत्वविद सामाजिक तथा आर्थिक भिन्नता को जानने के लिए कई विधियों का प्रयोग करते थे। इन्हीं विधियों में से एक शवाधान का अध्ययन करते थे। जैसा कि मिस्र के कई पिरामिड में से कई पिरामिड राजकीय शवाधान थे, जहाँ बड़ी मात्रा में धन दफनाया जाता था।

4. ऐसी पुरावस्तु का अध्ययन पुरातत्वविद मोटे तौर पर भिन्नताओं को पहचानने में करते थे जो एक अन्य विधि है।

5. प्रस्तर पिंड तथा तांबा अयस्क जैसे कच्चे माल और औजार, त्याग दिया गया माल और कूड़ा-करकट जोकि शिल्प कार्य के संकेतक में से एक थे, पुरातत्वविद शिल्प उत्पादन के केंद्रों को पहचानने के लिए इन सब का प्रयोग करते थे।

प्रश्न 8. हड़प्पा समाज में शासकों द्वारा किए जाने वाले संभावित कार्यों की चर्चा कीजिए।

उत्तर— हड़प्पा संस्कृति की व्यापकता एवं विकास को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सभ्यता किसी केंद्रीय शक्ति से संचालित होती थी। वैसे यह प्रश्न अभी विवाद का विषय बना हुआ है फिर भी हड़प्पावासी व्यापार की ओर अधिक आकर्षित थे इसलिए ऐसा माना जाता है कि संभवत: हड़प्पा सभ्यता का शासन वणिक वर्ग के हाथ में था।

व्हीलर ने सिंधु प्रदेश के लोगों के शासन को मध्यमवर्गीय जनतंत्रात्मक शासन कहा और उसमें धर्म की महत्ता को स्वीकार किया।

स्टूअर्ट पिग्गट महोदय ने कहा मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक ना होकर जनतंत्रात्मक था।

मैके के अनुसार मोहनजोदड़ो का शासन एक प्रतिनिधि शासक के हाथों था।

सैंधव सभ्यता का विनाश- सिंधु सभ्यता के पतन के संदर्भ में व्हीलर का मत पूरी तरह से अमान्य हो चुका है। हरयूपिया का उल्लेख जो ऋग्वेद में प्राप्त है उसे व्हीलर ने हड़प्पा मान लिया और किले को पूर्व और आर्य के देवता इंद्र को पुरंदर मानकर यह सिद्धांत प्रतिपादित कर दिया कि सैंधव नगरों का पतन आर्यों के आक्रमण के कारण हुआ था। ज्ञातव्य है कि व्हीलर का यह सिद्धांत तभी खंडित हो जाता है जब सिंधु सभ्यता को नगरीय सभ्यता घोषित किया जाता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर कंकाल किसी एक समय के नहीं हैं जिनमें व्यापक नरसंहार घोषित हो रहा है।

प्रश्न उत्तर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता के किस नगर को मृतकों का टीला कहा जाता है?

a. हड़प्पा b. मोहनजोदड़ो c. कालीबंगा d. लोथल

2. हड़प्पा सभ्यता के किस नगर से जुते हुए खेत का प्रमाण मिला है

a. हड़प्पा b.लोथल c. धोलावीरा d. कालीबंगा

3. लोथल किस नदी के किनारे स्थित है?

a. रावी b. सिंधु c. भोगवा d. साबरमती

4. हड़प्पावासी लाजवर्द मणि कहाँ से प्राप्त करते थे?

a.लोथल b. शोर्तुघई c. कालीबंगा d. धोलावीरा

5. मेसोपोटामिया के लेखों में मेलूहा नाम से किसे इंगित किया गया है?

a. हड़प्पा सभ्यता b. मिस्त्र की सभ्यता
c. चीन की सभ्यता d. इनमें से कोई नहीं

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त विशाल स्नानागार का क्या महत्व है?

प्रश्न 7. सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों का भोजन कैसा था?

प्रश्न 8. हड़प्पाई लिपि की दो विशेषताएँ बताएं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9. हड़प्पावासियों का पश्चिम एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों का वर्णन कीजिए?

प्रश्न 10. सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के क्या कारण थे?